بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 18 अप्रैल 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.

वर्ष 7 व 8 हिजरी के कुछ युद्धों एवं सैन्य अभियानों के परिपेक्ष में
सीरत-ए-नबवी ﷺ का बयान व पाकिस्तान के अहमदियों के लिए दुआओं की प्रेरणा।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-18.04.2025

محلہ احمدیہ قادیان پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशहहुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत के हवाले से कुछ अन्य लड़ाईयों एवं युद्ध अभियानों का आज वर्णन करूंगा। इतिहास में एक सैन्य अभियान हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ी. नामक का वर्णन है जो कि तुर्बा नामक स्थान की ओर भेजा गया था। यह सैन्य अभियान शअबान के महीने 7 हिजरी में हुआ। रसूलुल्लाह स. ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ी. को हवाज़न नामक क़बीले की ओर तुर्बा की तरफ़ तीस लोगों के साथ भेजा। इस सैन्य अभियान को भेजने का कारण यह था कि रसूलुल्लाह स. को तुर्बा वालों की ओर से इस्लाम के विरुद्ध षड्यंत्रों की सूचनाएं मिल रही थीं। हज़रत उमर रज़ी. रवाना हुए, तुर्बा वालों को सूचना मिली तो वे वहां से भाग गए। हज़रत उमर रज़ी. उनके इलाक़े में पहुंचे परन्तु वहाँ कोई नहीं था, उनकी पूरी धन सम्पत्ति, पशु इत्यादि वहाँ थे, क्यूंकि ये उपद्रवी लोग थे इस लिए आप स. ने वह पूरी सम्पदा अपने अधिकार में ले ली और वापस चल पड़े।

फिर एक सरिय्या (सरिय्या अर्थात ऐसा युद्ध अभियान जिसमें नबी करीम स. स्वंय शामिल नहीं थे) हज़रत बशीर बिन सअद रज़ी. फ़िदक में बनू मुर्रह की ओर है। यह सरिय्या शअबान 7 हिजरी में हज़रत बशीर बिन सअद रज़ी. के नेतृत्व में हुआ। इस सरिय्ये का विस्तरित विवरण इस प्रकार बयान हुआ है कि रसूलुल्लाह स. ने हज़रत बशीर बिन सअद रज़ी. को तीस सहाबियों के साथ फ़िदक बिन बनू मुर्रह की ओर भेजा। यह स्पष्ट रहे कि आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम इन अभियानों को अथवा सैन्य दलों को उस समय भेजते थे जब यह सूचना होती थी कि ये लोग इस्लाम के विरुद्ध षड्यंत्र कर रहे हैं। अतएव सहाबा रज़ी. रवाना हुए और बकरियां चराने वालों से मिले और उनसे बनू मुर्रह के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने बताया बनू मुर्रह अपनी घाटी में हैं और स्रोत पर नहीं आए। सहाबियों रज़ी. ने उनकी भेड़ बकरियां

हांकी और मदीने की ओर वापस रवाना हो गए। बनू मुर्रह का मुनादी पुकार उठा, इस घटना की सूचना दी। इस पर बनू मुर्रह के लोग वापस आए और उन्होंने अति विशाल सेना लेकर मुसलमानों पर आक्रमण किया। पूरी रात मुसलमान तीरों से हमला रोकते रहे, यहाँ तक कि सहाबियों के तीर समाप्त हो गए। जब मुसलमानों पर प्रातः हुई तो बनू मुर्रह ने दोबारा हमला कर दिया और हज़रत बशीर रज़ी. के साथियों को शाहीद कर दिया। आप रज़ी. उन लोगों से घोर युद्ध करते रहे यहाँ तक कि वे ज़ख़्मी होकर गिर पड़े, उनके टखने पर चोट लगी थी और समझा गया के वे शहीद हो गए हैं, किन्तु वे सुरक्षित रहे। फिर बनू मुर्रह अपनी भेड़ें और बकरियां लेकर वापस चले गए।

फिर एक सरिय्या हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह रज़ी. के नाम का वर्णन है जो कि मीफ़ा की ओर भेजा गया। यह सरिय्या रमज़ान के महीने 7 हिजरी मैं हुआ। इब्ने सअद ने लिखा है कि रसूलुल्लाह स. ने आप रज़ी. को बनू अवाल बिन सअल्बा की ओर भेजा जो मीफ़ा में थे। उन्होंने मुसलमानों के विरुद्ध नकारात्मक प्रचार करते हुए लोगों को एकत्र करना शुरू कर दिया था ताकि अह्ज़ाबे अरब जैसी कोई अन्य करवाई की जा सके। रसूलुल्लाह स. ने आप रज़ी. को एक सौ तीस सहाबियों के साथ भेजा। रसूलुल्लाह स. के द्वारा आज़ाद किए गए गुलाम यसार रज़ी. उनके गाइड थे। मुसलमानों ने एक साथ उन पर आक्रमण किया और उनकी बस्तियों तक जा पहुंचे। उनमें से जो मुक़ाबले पर आया उसकी हत्या कर दी और माले ग़नीमत के रूप में भेड़ बकरियां मदीना ले आए और किसी को बंदी न बनाया।

इब्ने सअद ने लिखा है कि यह वही सरिय्या है जिसमें हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ी. ने मिर्दास बिन नहीक की हत्या की थी और जिसने ला इलाहा इल्लल्लाह कह दिया था। बुख़ारी में इस घटना की विस्तृत जानकारी हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ी. के द्वारा इस प्रकार मिलती है कि जब नबी करीम स. को यह सूचना मिली तो आप स. ने फ़रमाया कि ऐ उसामा! क्या तुमने उसे मार डाला बाद इसके कि उसने कहा ***ला इलाहा इल्लल्लाह*** मैंने कहा कि वह अपना बचाओ कर रहा था, किन्तु आप स. बार बार यही दोहराते रहे, यहाँ तक कि मेरा दिल चाहता था कि मैं उस दिन से पहले मुसलमान न हुआ होता। मुसलिम ने इस रिवायत को इस प्रकार लिखा है कि तुम ने क्यूं न उसका दिल चीरा, ताकि तुम जान लेते कि उसने यह कालिमा दिल से पढ़ा था कि नहीं।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- परन्तु आजकल के मौलवी यह समझते हैं कि उन्होंने अहमदियों के दिल चीर कर देख लिए हैं, इसलिए अहमदियों को शहीद करना तथा उनपर अत्याचार करना वैध है, अल्लाह तआला इनकी पकड़ के भी सामान करे।

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह स. ने मिर्दास के लोगों को इस हत्या का बदला चुकाने का आदेश दिया और उसका धन उसको वापस कर दिया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने इस घटना को इस प्रकार बयान किया है कि जब रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस लड़ाई की सूचना देने के लिए एक बदवी व्यक्ति मदीना पहुंचा तो उसने लड़ाई की सम्पूर्ण जानकारी देते हुए यह घटना भी बताई। इस पर आप स. ने उसामा को बुलवाया और पूछा कि क्या तुमने उस आदमी को मार दिया था? उन्होंने कहा कि हाँ। आप स. ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन तुम क्या करोगे, जब ***ला इलाहा इल्लल्लाह*** तुम्हारे विरुद्ध गवाही देगा।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि जैसा कि मैंने पहले कहा, ये मौलवी और इनके चेले जो आजकल पाकिस्तान में हैं, जन्नत में जाने की बातें करते हैं, कहते हैं कि अहमदियों की हत्या कर दो तो जन्नत में

जाओगे। परन्तु उन्हें पता नहीं कि ये कृत उन्हें दंड का भागीदार बना रहे हैं, कभी न कभी तो अल्लाह तआला की पकड़ उन पर आएगी।

फिर एक सरिय्या हज़रत बशीर बिन सअद रज़ी. है तो यमन और जबार की ओर है। यह सरिय्या शव्वाल 7 हिजरी में हुआ। रसूलुल्लाह स. को सूचना मिली कि गत्फ़ान का एक दल आप स. के मुक़ाबले पर जमा हो रहा है और उयीना बिन हिस्न ने आप स. के विरुद्ध इनका साथ देने का वादा किया है। आप स. ने हज़रत अबू बकर रज़ी. और हज़रत उमर रज़ी. के सुझाव से हज़रत बशीर बिन सअद रज़ी. को तथा उनके साथ तीन सौ सहाबियों को रवाना फ़रमाया। जब वे जबार नमक स्थान पर पहुंचे तो गत्फ़ानी लोग यह खबर सुनकर अपनी सम्पदा एवं पशुओं को छोड़ कर अपनी बस्ती के ऊंचाई वाले क्षेत्रों की ओर भाग गए, उनमें से केवल दो आदमी हाथ लगे, जिन्हें बंदी बना लिया गया। सहाबा रज़ी. ने भेड़ बकरियां और ऊंटों को अपने अधिकार में ले लिया और बंदियों सहित वापस मदीना आ गए। यहाँ वे दोनों बंदी मुसलमान हो गए तो आप स. ने उन्हें वापस अपने इलाक़े में जाने दिया।

उमरतुल क़ज़ा का विस्तृत बयान इस परकार है कि रसूलुल्लाह स. ज़ुलक़अदा के महीने 7 हिजरी, फ़रवरी 629 ई. उमरातुल क़ज़ा के लिए रवाना हुए। यह वही महीना था जिसमें पिछले साल मक्का के मुशरिकों ने आप स. को उमरा नहीं करने दिया था और हुदैबियः नामक स्थान से ही आप स. वापस लौट आए थे। अतएव अब उस उमरे की क़ज़ा के लिए आँहुज़ूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले गए। उमरे के लिए प्रस्थान का विवरण इस प्रकार बयान हुआ है कि इस उमरे की यात्रा में आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ दो हज़ार सहाबी थे। आप स. के साथ क़ुरबानी के साठ ऊँट थे। आप स. सहाबियों रज़ी. की संगत के साथ तल्बियः करते हुए हरम की ओर बढ़े। क़ुरबानी के जानवरों को ज़ित्तुवा की ओर भेज दिया। आप स. अपनी क़सवा नामक ऊंटनी पर सवार थे। आप स. ने मस्जिदे हराम में पहुँच कर इज़्तबा कर लिया अर्थात चादर को इस प्रकार ओढ़ लिया कि आप स. का दाहिना कंधा और बाज़ू खुल गए और आप स. ने फ़रमाया कि ख़ुदा उस पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाए, जो इन काफ़िरों के सामने अपना शक्ति प्रदर्शन करे। आप स. ने अपने सहाबा रज़ी. के साथ परिकर्मा के आरंभिक तीन चक्करों में कन्धों को हिला हिला कर खूब अकड़ते हुए चल कर परिक्रमा की।

इस असवर पर आंहुज़ूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की हज़रत मैमूना सुपुत्री हारिस रज़ी. से शादी का भी वर्णन मिलता है। आंहज़रत स. मक्का में तीन दिन तक रहे, चौथे दिन मक्का वालों के कहने पर आप स. तुरन्त समस्त सहाबियों सहित मक्का से रवाना हुए।

इस यात्रा में हज़रत हमज़ा रज़ी. की बेटी की भी घटना मिलती है, जब नबी करीम सलल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का से जाने लगे तो हज़रत हमज़ा रज़ी. की बेटी आप स. के पीछे पुकारती हुई आई कि ऐ मेरे चचा! ऐ मेरे चचा! इस पर हज़रत अली रज़ी. ने उसे ले लिया, उसका हाथ पकड़ा और हज़रत फ़ातमा रज़ी. से कहा कि अपने चचा की बेटी को ले लें। उन्होंने इसको अपने साथ सवार कर लिया तो हज़रत अली रज़ी. ने, हज़रत ज़ैद रज़ी. और हज़रत जाफ़र रज़ी. ने उनके विषय में झगड़ा किया तो नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसका फ़ैसला उसकी ख़ाला के पक्ष में किया और फ़रमाया कि ख़ाला माँ के समान है। हज़रत अली रज़ी. ने कहा कि क्या आप स. हज़रत हमज़ा रज़ी. की बेटी से शादी नहीं करेंगे? आप स. ने फ़रमाया कि मेरे रज़ाई भाई की बेटी है, इस रिश्ते के कारण शादी नहीं हो सकती। आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़िलहिज्जः के महीने में मदीने वापस तशरीफ़ ले आए।

एक सरिय्या अख़रम बिन अबी औजा, बनू सुलेम की ओर है। यह सरिय्या ज़िलहिज्जः 7 हिजरी में हुआ, आप स. ने हज़रत अख़रम रज़ी. को पचास आदमियों के साथ बनू सुलेम की ओर भेजा, जो मदीने के निकट निवास रखते थे, बनू सुलेम का एक जासूस आप स. के साथ था। उसने आगे जाकर अपनी क़ौम को सचेत कर दिया और उन्होंने एक बड़ी सेना एकत्र कर ली। जब हज़रत अख़रम रज़ी. उनके पास पहुंचे तो बनू सुलेम उनके मुक़ाबले के लिए तय्यार थे। आप स. ने उनको इस्लाम की दावत दी तो उन्होंने इन्कार कर दिया। उसके बाद दोनों ओर से कुछ देर तीर चलते रहे, इसी बीच बनू सुलेम के लिए और अधिक सैन्य सहायता आ गई और उन्होंने मुसलमानों को चारों ओर से घेर लिया। मुसलामनों ने घोर युद्ध लड़ा, यहाँ तक कि उनमें से अधिकाँश लोग शहीद हो गए और हज़रत अख़रम रज़ी. भी मृतकों के साथ घोर ज़ख़्मी होकर गिर पड़े, फिर वे सिफ़र महीने की पहली तिथि, 8 हिजरी को रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहुँच गए।

फिर एक सरिय्या हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह रज़ी. लेसी, कदीद की ओर जाने का वर्णन है। रसूलुल्लाह स. ने आप रज़ी. को सिफ़र 8 हिजरी में बनू लेस की शाखा बनू मुलव्वाह की ओर 15 लोगों के साथ रवाना किया जो कदीद में रहते थे और इस सरिय्ये में मुसलमानों का साहस अमित अमित था।

इस सरिय्ये का संक्षिप्त विवरण बयान करने के बाद हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अभी ये घटनाएं शेष हैं। इस समय मैं पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी विशेष रूप से दुआ के लिए कहना चाहता हूँ, जैसा कि मैंने कहा था कि दरूद की ओर ध्यान दें और दो सौ बार पढ़ा करें- سبحان اللہ وبحمدہٖ سبحان اللہ العظیم اللھم صلی علی محمد واٰل محمد इस समय इसकी ओर जितना ध्यान दिया जा सकता हो, वह होना चाहिए। यदि हम दुआ का हक़ अदा करते हुए दुआओं की ओर ध्यान देंगे तो फिर ही सफलता है, जितना ध्यान देना चाहिए था वह ध्यान दिया नहीं जा रहा। केवल इतना कह देना, कुछ लोग मुझे भी लिख देते हैं कि दुआओं से कुछ नहीं होगा, कुछ और करना चाहिए, कुछ और क्या करना चाहिए? हमारा हथियार तो केवल दुआएं हैं, इस विषय में कई बार मैं बयान कर चुका हूँ। मैं हज़रत मसीह मौऊद अलै. के वृत्तान्त बयान कर चुका हूँ, यह अत्यंत अनुचित विचार है कि दुआओं से कुछ नहीं होना। अतएव दुआएं ही हैं जो हमारी सफलता का समाधान हैं। अल्लाह तआला सबको इसकी तौफ़ीक़ भी दे और हम दुआ का हक़ अदा करने वाले बनें। यदि हम केवल यह कह दें कि दुआओं से कुछ नहीं होता और हक़ अदा नहीं करना, तो यह अनुचित शिकायत है जो हम अल्लाह तआला से करेंगे। अतः इसके लिए इस्तग़फ़ार भी हमें करनी चाहिए। आज कराची में एक घटना भी हुई है, बलवाइयों ने, आतंकवादियों ने जो इस्लाम के नाम पर हैं परन्तु हैं आतंकी ही, हमारी मस्जिद पर हमला किया है और एक अहमदी को शहीद भी कर दिया है ***इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैही राजिऊन*** इसकी पूरी जानकारी तो अभी नहीं मिली, विस्तृत सूचना मिलेगी तो बयान भी हो जाएगी, इंशाल्लाह। अल्लाह तआला इन अत्याचारियों की भी पकड़ के शीघ्र साधन फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ۔ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131